यु.जी.सी. द्वारा आयोजित द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग

विविध विधाओं के संदर्भ में

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

"समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग"
(Collective Essays Presented at International Conference on "FARMERS AND LABOURS STRUGGLES IN THE CONTEMPORARY HINDI LITERATURE")

प्रधान संपादक – प्रो. सीताराम के. पवार

© : प्रधान संपादक

प्रकाशक : इन्टरनैशनल पब्लिकेशन, कानपुर (उ.प्र)

मुद्रक : श्री रेणुका प्रेस, लाईन बजार, धारवाड.

वर्ष : 2017

पृष्ठ : 667+VIII

ISBN : 978-81-928158-6-2

मूल्य : **₹ 850/–**

सभी हक सुरक्षित है (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल, सहमत होंगे ही ऐसा नहीं है ।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

54	समकालीन हिंदी कविता में किसान जीवन का यथार्थ	प्रा. मारोती यमुलवाड	209
55	उशा प्रियंवदा के उपन्यासों में श्रमिक एवं कामकाजी महिलाओं का चित्रण	डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव	211
	'धीर' उपन्यास में श्रमिक वर्ग का जीवन संघर्ष	डॉ. संतोष विजय येरावार	215
56	"नरक कुंड में बास" उपन्यास में चित्रित श्रमिक जीवन	डॉ. साताप्पा शामराव सावंत.	218
57	समकालीन कविताओं में मजदूरों की त्रासदी	डॉ. शीला भास्कर	222
58	समकालीन हिन्दी कहानी में किसान और	डॉ. शिवगंगा रंजणगी	225
59	मजदूरों की कथा-व्यथा		
60	प्रेमचंद के कथा साहित्य में किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ. एम.एस. वीरघंटिमठ	227
61	'पुरस्कार' कहानी में चित्रित किसान वर्ग का संघर्ष	Dr.Hasankhan K Kulkarni	230
62	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में श्रमिक वर्ग का संघर्ष	डॉ. कस्तूरी. पी. बिक्कणवर	233
63	केदारनाथ अग्रवालजी के काव्य में किसान एवं मजदूर वर्ग	Smt. Rekha A Kulkarni	235
64	समकालीन उपन्यास और किसानों का जीवन-संघर्ष	डॉ.परशुराम.ग.मालगे	238
65	डॉ. श्री आरिगपूडि के उपन्यासों में किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ. सलमा शाहीन	241
66	समकालीन हिंदी कविता में किसान और श्रमिक वर्ग के जीवन का यथार्थ	डॉ. संजय प्रसाद श्रीवास्तव	244
67	समकालीन हिन्दी नाटकों में किसान वर्ग का चित्रण	डॉ. बालाजी बळीराम गरड	247
68	नवपूँजीवादी दौर में बेदखल होते किसान, श्रमिक एवं मजदूर	सुश्री. जयश्री पाटील	251
69	समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण चेतना	डॉ. कविता वि. चांदगुडे	254
70	बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों में श्रमिक जीवन	डॉ. प्रेमचन्द चव्हाण	257
71	अशोक वाजपेयी के काव्यों में किसान और मजदूर	डॉ.राजकुमार एस. नाईक	260
72	समकालीन उपन्यास 'धरती धन न अपना' में किसान वर्ग	श्री.रमेश क. पर्वती	262
73	हिन्दी साहित्य में किसान और मजदूर	प्रो.जि.आर.सर्वमंगला	264
74	केदारनाथ अग्रवाल की कवितओं में चित्रित श्रमिक एवं किसान वर्ग	सतीश भास्कर	267
75	समकालीन हिंदी उपन्यासों में कृषक-जीवन	प्रो. एन. सत्यनारायण	269
76	मलखान सिंह के हिंदी कविता संग्रह 'सूनो ब्राह्मण' में चित्रित दलित मजदूर	प्रा गोरख निळोबा बनसोड	272
77	मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में श्रमिक वर्ग	छायाकुमारी	276
78	बाल श्रमिक व किसानों की दशा से जुड़ा यथार्थवादी नाटक ! जादू का कालीन	डॉ.वी.पार्वती	279

'धार' उपन्यास में श्रमिक वर्ग का जीवन संघर्ष

डॉ. संतोष विजय येरावार

सजीव का 'धार' उपन्यास आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यास हैं।उपन्यास में बिहार संथाल परगना के बांसगडा आंचल कें कोयला खदानों मे काम करनेवालें श्रमजीवी आदिवासियों के जीवन संघर्ष को उघाडाच है। संथाल आदिवासीयों के जीवन संघर्ष को लेकर लिखा गया 'धार' उपन्यास आदिवासी श्रमिक वर्ग के जीवन में व्याप्त विकषतियों, पीडा, वेदना, अभाव, लाचारी एवं संघर्ष को अभिव्यक्त करता है। आदिवासी श्रमिक वर्ग के मजबुरी का फायदा उठाने के लिए जमीनदार, साहुकार, प्रशासकीय अधिकारी, राजनेता एवं उच्च वर्ग सभी लालायत होते हैं। 'धार' उपन्यासमें भी कोयला खदान में काम करनेवालीं मैना को जेल में बंद किया जाता हैं। जेल मे जाहिल कठोर एवं राक्षसीवष्त्तीवाला जेलर मैना पर बलात्कार करता हैं। उसे आपमानित एवं प्रताडित करता है। मैना का जीवन जेलर के कारन विक्षिप्त एवं दुखी हो जाता है। आदिवासियों को असभ्य, पिछडा, तिरस्कष्त समझकर उनका शारिरिक एवं मानसिक शोषन किया जाता है। ऐसे शोषित, बेबस, सभी से अनभिज्ञ लोगो को व्यवस्था द्वारा ठगा एवं लुटा जाता हैं। सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थिती से कमजोर आदिवासी श्रमिक वर्ग का संपुर्ण जीवन त्रासद एवं संघर्षपुर्ण होता है। श्रमकि वर्ग में तथा, पुॅजीपती, उच्चवर्ग, जमिदांरो एवं कारखानदारों जमीन आसमान का अंतर होता हैं। उच्चवर्ग के पास भौतिक सुखसाधनों की एवं सुविधाओं की भरमार होती हैं, और श्रमिक वर्ग को अपने पेंट की भूख मिटानें के लिए भी संघर्ष करना पडता है। कुपोषण, भूखमरी, दरिद्रता, शोषण, बेरोजगारी, अंधश्रद्धा, एवं तिरस्कार आदि उनके अंगविशेष बन गए हैं। श्रमिक वर्ग को ना अच्छी शिक्षा मिलती है, ना कोई आरोग्य विषयक सुविधा, और न हि रहने की स्थिर व्यवस्था, आदिवासी श्रमिक वर्ग को दर–दर की ठोकर खाकर जीवन ज्ञापन करना पडता है। श्रमिक वर्ग का प्रस्थापित व्यवस्था द्वारा शोषन तो आम बात बन गई हैं। श्रमिकों के साथ पशु–जैसा अमानवीय व्यवहार किया जाता हैं। काम का मेहनताना कम मिलने के बावजुद मजबूरी के कारन श्रमिक वर्ग विरोध नहीं कर सकता। कार्यस्थल पर महिलांवोंकी मजबुरी का भी फायदा उठानेवालों की कमी नहीं होती हैं। इसलिए श्रमिक मानसिक रूप से दासता का अनुभव कर रहे हैं। आदिवासी श्रमिक वर्ग की ईसी पीडा और संघर्ष को संजीवजी नें अपने उपन्यास में उदघाटित किया हैं। संजीव जी ने खुद इस पीडा का एहसास किया है। उन लोगों की झोपडियों श्रमिक, अदिवासियों के साथ रहना, उनके सुख–दुख में सम्मीलित होनाउनकी परेशानीया एवं समस्यावोंसे तादात्म स्थापित करना, उनसे अपनत्व का भाव निर्मान करना, उनकी सहायता करना उनकी मानसिकता को समझना इस प्रकार की संवेदना से संजीव जी श्रमिक आदिवासियों से जुडे थे। आदिवासीयों की इन्ही संवेदना, मानसिकता एवं परिस्थिती को उपन्यास में मुखरित किया गया है। संजीव जी जॅहा

आदिवासियों से जुडते हे वहि वह उनका शोषन करनेवालों पर कडा प्रहार भ करते हैं। आदिवासी श्रमिक वर्ग के प्रती उच्चवर्ग की घर्षणित एवं विकष्त मानसिकता कों भी उपन्यास में उघाडा गया है।

बिहार राज्य का संथाल परगना कोयले की गहरी खदानों के लिए प्रसिद्ध है। इसी खदानों में काम करनेवाले श्रमिक वर्ग की करूण गााथा 'धार' हैं। "वहॉ के मजदूर अपने पेट की आग को ठारने के लिए जमीन के भीतर–ही–भीतर बडी बडी गर्तों में कोयला निकालने के लिए चले ही जाते है। कभी – कभार उन्हीं खदानों के भीतर करूण कहानियॉ बन जाया करती हैं। कभी खदानों की जमीन मे धॅसने, कभी जहरीली वायु के फटने, तो कभी पानी भर जाने के कारण दुर्घटनाएँ हुआ करती हैं। वहॉ की जमीन के उदर में दबी कहानियों में खास करके श्रमजीवी, मजदूर लोंगो की व्यथा–कथा को व्यापक फलक पर 'धार' उपन्यास में परिभ्राषित किया है।"[1]

'धार' उन्यास के केंद्र में संथाल परगना का बॉसगडा अॅचल औरश्रमिक आदिवासी हैं। उच्चवर्ग के षडयंत्र, प्रशासकिय अधिकारीयों का दमन, वासनांध मानसिकतासे ग्रस्त व्यक्ती–पूॅजीवादी शोषक प्रधान व्यवस्था, अवैध खनन, ठेकेदारों का आतंक, माफिया गिरोहों का आतंक, राष्ट्रीय संपत्ती की लूट, श्रमजीवियों का शोषण, समाजिक एवं आर्थिक परिस्थिती में व्याप्त विसंगती एवं विडंबनाए, तथा आदिवासीयों के जीवन में व्याप्त अभाव, संत्रास एवं संघर्ष को इस रचना में उघाडा गया है। आदिवासीयों की रीति रीवाज, प्रथा–परंपरा और अंधविश्वासो का भी वास्तविक अंकन हुआ है।डॉ राम विनोद सिंह के अनुसार "आलोच्य उपन्यास में विद्रोह विचार दिशा और परिवेश का सफलतापूर्वक अधि ाग्रहण हुआ है।"[2] मजदूर वर्ग का शोषण और संघर्षमय जीवन पूर्ण रूप से उभरा है। मैना के माध्यमसे नई चेतना, अधिकारबोध और परिवर्तन की बयार को भी रेखाकिंत किया गया है।

उपन्यास की प्रमुख पात्र मैना संघर्ष, चेतना एवं विद्रोह की सुत्रधार हैं। मैना से जेल में जेलर जबरन बलात्कार करता हैं और उसे अपनी वासना का शिकार बनाता है। परिणामस्वरूप मैना एक बच्चे को जन्म देती है। उसी जेल में मगर नामक कबाडी कैदि हैं जेलर मगर को मार–मार के कबुल करवाता है कि उसने हि बलात्कार किया है। मैना बच्चा जेलर के मुंहपर मारकर जाती है। परंतु मगर अपनी सजा कम करने के लिए बच्चे को अपने बच्चे के रूप में स्विकार करता है और जेल से रिहा होता है। और मगर मैना के पिछे–पिछे उसके गांव चला जाता है। मंगर के कारन मैना का सारा–सोचा समझा चौपट हो जाता है। संजीव ने उपन्यास में अभावग्रस्त आदिवासियों का वास्तविक अंकन किया है। मैना अपने पति के होते हुए भी पराये मर्द के साथ एक बच्चे के साथ आती हैं जिसकारन उसका जीवन त्रासद हो जाता है। मैना मंगर के साथ रेल के डब्बे में रहती हैं और परिवर्तन की नींव निर्माण करती हैं। मैना शर्मा बाबू के साथ परिवर्तन कि लडाई

शुरू करती हैं। कोयला खदानों में काम करनेवाले लोगों की यातना को वाणी देने का, उने अधिकारों के प्रती सचेत करने का और जनखदान निर्माण करने की लढाई मैना प्रारंभ करती है। वह एक साथ पति, पिता, बिरादारी, गुंडे, पूँजीवति और समाज व्यवस्था से संघर्ष करती है।

"अपनी आदिवासी परंपरा की माटी से उपजा इस नारी में अकाटय साहस, स्वाभिमान, सेवाभाव, अन्यास के खिलाफ संघर्ष, विद्रोह, राष्ट्रीय भाववना जैसी कई विशेषताएँ मिलती हैं।। अनुभव से बनी मैना क्रांतिकारी क्रियाशक्ति बनकर लेखकीय विचारों को नए आयाम देती है। वह जो भी करती है केवल संथाल परगना के आदिवासियों के लिए करती है। मैना तेजाब की फेक्टरी को सबकी मौत बताती है। वह फैक्टरी का विरोध करती केवल अकेली रात होते ही फैक्टरी को तोडने निकल पडती है। मामा के शब्दों में "रात होते ही मैना कुल्हाडी लेकर फैक्टरी की टंकी तोडने के लिए निकल पडती है और उधर टेंगर रात – रात भर लाठी लेकर फैक्टरी का चक्कर काटता पहारा देता – धरमयुद्ध! इसी वारदाता में मैना को जेल हुआ, कोर्ट में फोकल और टेंगर भी मैना के खिलाफ गवाही दिये।"[4] मैना के पात्र में उपन्यासकार ने आत्मबल को भी ठूंस–ठूंस कर भरा है। "मैना ने एक उडती नजर सोते हुए मंगर और अपने बच्चे पर डाली।"[5]

रंडी ते, तेरा मॉ रंडी, तेरा बहन रंडी, तेरा बेटी रंडी! तेरी गुस्टी खानदान रंडी। केवल इतना ही नहीं वह संथालों की मिटती अस्मिता का प्रश्न उठाकर वर्ग संघर्ष की भूमि तैयार करती है। उसके स्वाभिमान को तोडने के लिए अनेक प्रयत्न होते हैं" "लेकिन वह हारकर भी टूटती नहीं हारी हुई मानसिकता से वह तुरन्त बाहर आकर संघर्ष को तैयार मिलती है। इसी कारण उसके संदर्भ में बुर्ग हैदर मामा कहते हैं– "वो आग है, आग जिसे छूती है, भस्म कर देती है।"[6]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिंदी में आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन, प्र.बी.के कलवसवा, पष–173
2. नौंवे दशक के हिन्दी उपन्यास, डॉ रामविनोद सिंह, पष – 171
3. 'धार'संजीव पष – 57
4. हिन्दी में आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन, प्रा. पी. के कलसवा, पष – 176
5. वही, पष 177
6. वही, पष 177